इकाई 9 बर्कले*

रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 परिचय

9.2 भौतिकवाद का खण्डन

9.3 अमूर्त विचारों का निरसन

9.4 दृश्यते इति वर्तते

9.5 ईश्वर और वस्तुओं का अस्तित्व

9.6 द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद का खण्डन

9.7 सारांश

9.8 कुंजी शब्द

9.9 अन्य सहायक अध्ययन—सामग्री एवं सन्दर्भ

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य है,

- ब्रिटिश दार्शनिक जार्ज बर्कले के मुख्य विचारों के बारे में जानना।

* डॉ. सुधा गोपीनाथ, कोरामंगला, बैंग्लोर। (यह इकाई बीपीवाई—008 की "बर्कले" इकाई का संशोधित संस्करण है)। अनुवाद— वेदप्रकाश सिंह, फरीदाबाद।

- उनके अनुभववाद और व्यक्तिनिष्ठ प्रत्ययवाद का विवरण देना।
- उनके प्रसिद्ध कथन 'दृश्यते इति वर्तते' (esse est percipi) अर्थात् 'होने का अर्थ है अनुभूत होना' की व्याख्या करना।
- यह देखना कि बर्कले कैसे निरीश्वरवाद, भौतिकवाद, द्वैतवाद और संशयवाद का खण्डन करते हैं तथा कैसे सिद्ध करते हैं कि एकमात्र और सर्वव्यापी ईश्वर ही बाह्य विश्व के अस्तित्व का अकेला निर्धारक है।

8.1 परिचय

जान लॉक के आलोचक के रूप में तथा डेविड ह्यूम के पूर्ववर्ती के रूप में जार्ज बर्कले ने ज्ञानमीमांसा और तत्वमीमांसा के महत्वपूर्ण प्रश्नों के सम्बन्ध में एक सर्वथा मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय मौलिकता से पदार्थ के अस्तित्व को नकारते हुए बर्कले ने दर्शन का एक प्रभावी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। जार्ज बर्कले एक आइरिस व्यक्ति थे जिनका जन्म 1685 में हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा किलकैनी में लेने के बाद सोलह वर्ष की अवस्था में उन्होंने ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश किया। यहां वे अपने कैरियर की पराकाष्ठा पर पहले स्नातक छात्र के रूप में और इसके बाद एक शिक्षक और शोधार्थी के रूप में पहुंचे। उन दिनों ट्रिनिटी बड़े स्तर पर न्यूटन–विज्ञान और देकार्त, लॉक, मिल, मैलब्रास के नये दर्शन से प्रभावित था। बर्कले अपनी प्रखर बुद्धि के साथ वैज्ञानिक व दार्शनिक क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। उन्होंने 1713 में लंदन की यात्रा की। यहाँ उन्होंने अपने समय के महान विद्वानों स्वीफ्ट, स्टिले, ऐडिसन और पॉप आदि पर विशेष प्रभाव छोड़ा। उन्होंने बरमूडा में कॉलेज की स्थापना की योजना बनाई। इस उद्देश्य से बाद में वे अमेरिका चले गये। तीन वर्ष (1728–31) रॉड आइसलैण्ड में व्यतित करने के बाद उन्होंने अपनी योजना को छोड़ दिया और इंग्लैण्ड लौट आये। उन्होंने नयी दुनिया की संभावनाओं को उद्वेलित किया। यहां उन्होंने कवितायें लिखीं। उनकी कविता की यह पंक्ति कि साम्राज्य (अमेरीका) पश्चिम के अन्वेषण और विस्तार की ओर पूर्व निर्दिष्ट रूप से अग्रसर है, बहुसंदर्भित है, जिसके कारण उनके नाम पर कैलीफोर्निया के एक कस्बे का नाम रखा गया।

1734 ई.वी. में वह दक्षिणी आयरलैण्ड में क्लोपने के बिशप बने। यहाँ उन्होंने सेवानिवृत्ति का जीवन जिया और एक विद्वान के रूप में पढ़ते हुए पुस्तकों को प्रकाशित किया और समय–समय पर अपने अभिलेखों को भी प्रकाशित किया। किसानों की निम्न आर्थिक स्थिति में सुधार लाने का प्रयास किया। 67 वर्ष की उम्र में जब बर्कले का स्वास्थ्य बिगड़ गया तो वे क्लायने से आक्सफोर्ड चले गये। एक वर्ष पश्चात् 1753 में अपने परिवार के साथ चाय पीते हुए उनकी मृत्यु हुई। उन्हें क्राइस्ट चर्च चोपेल आक्सोड में दफना दिया गया। उनके कुछ प्रसिद्ध लेखन कार्य हैं;

कॉमन पलेस बुक (1706–1708)

ए न्यू थ्योरी ऑफ बिजन (1709)

द प्रन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलिज (1710)

द डायलॉग ऑफ हायलास एण्ड फिलोनाउस (1713)

एलिसिफ्रोन (1732) और साइरिस (1744)

अठ्ठाईस साल के बाद के उनके लेख कम प्रभावशाली थे। बर्कले ने सुन्दर और स्पष्टता के साथ लिखा।

बर्कले उस युग से सम्बन्ध रखते थे जबकि विज्ञान का विकास, भौतिकतावादी प्रवृत्ति, और नास्तिकतावाद अपनी जड़े जमाने लगा था। बर्कले एक धार्मिक पुरूष थे। बर्कले ने इस प्रवत्ति के विरूद्ध घोषणा की कि भौतिक जगत मूलतः आध्यात्मिक है और यह आत्म की क्रियात्मकता और ईश्वर की अच्छाई की अभिव्यक्ति है। यह आध्यात्मवाद उन्हें इतना स्पष्ट प्रतीत हुआ कि उन्होंने इसका बचाव तक करना आवश्यक नहीं समझा। इसके विपरीत भौतिकतावाद का निराकरण करना उनके लिए आवश्यक हो गया और उन्होंने लॉक के अनुभववाद में सम्मिलित विसंगतियों को दूर करने और उसे तार्किक निष्कर्ष तक पहुंचाने वाले कार्यों का निष्पादन किया।

बोध प्रश्न 1

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) बर्कले के जीवन और उनके कार्यों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

2) बर्कले की प्रमुख दार्शनिक समस्याओं को प्रकाशित कीजिए।

....

....

....

....

9.2 भौतिकवाद का खण्डन

लॉक के सामान्य ज्ञान को दर्शन का प्रस्थान बिन्दु मानते हुए बर्कले ने दर्शन का सबसे विचारोत्तेजक दृष्टिकोण विकसित किया। इसे विषयीनिष्ठ आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद नाम दिया गया। इसके अनुसार, कोई भौतिक पदार्थ या कोई भौतिक वस्तु यथार्थ नहीं है। केवल मन और मन के प्रत्यय ही यथार्थ है। यह आश्चर्य जनक वाद लॉक के सिद्धांत की तीन सरल

बातों से आता है। प्रथम, लॉक का यह विचार कि द्रव्य का प्रत्यय निर्मित नहीं किया जा सकता क्योंकि वस्तु के केवल गुणों का ही सम्वेदन होता है। दूसरे, प्राथमिक व द्वितीयक गुणों के अन्तर केवल मन सापेक्ष होते हैं न कि वस्तु सापेक्ष। तीसरे के अनुसार, एक बार यह स्थापित होने पर कि ईश्वर के अतिरिक्त सम्पूर्ण ज्ञान मनुष्य से प्राप्त होता है अनुभव के अतिरिक्त किसी अन्य के अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं उठता है। बर्कले ने तर्क दिया कि एक सुसंगत अनुभववादी को न केवल प्रत्यक्ष कारण के सिद्धांत की अवधारणा को निरस्त कर देना चाहिए बल्कि भौतिक वस्तुओं की धारणा को भी नकार देना चाहिए क्योंकि जो हम अनुभव करते हैं वह न तो वस्तु का करते हैं और न ही कारण का। हम केवल वस्तु द्वारा उत्पन्न प्रभावों (प्रत्ययों) का अनुभव करते हैं।

लॉक द्वारा निर्धारित अनुभववाद के मूल सिद्धांतों का उपयोग करते हुए बर्कले ने भौतिकवाद और निरीश्वरवाद को निरस्त करके आदर्शवाद को स्थापित किया। लॉक के इस दावे कि सम्वेदन और चिन्तन सभी ज्ञान का मूल है, और हम केवल प्रत्यय को ही जानते है का अनुसरण करने से वस्तु–जगत अग्राह्य हो जाता है। हमारी चेतना हम तक ही सीमित है और हमारे प्रत्ययों की इस मूर्त जगत से तुलना नहीं की जा सकती है। क्योंकि हम उनके स्वभाव और अस्तित्व से अनभिज्ञ हैं। बर्कले आगे कहते हैं कि यदि एक स्वतंत्र द्रव्य, जैसे कि भौतिक पदार्थ, और देश में स्थित जगत का अस्तित्व सम्भव हो तो अनन्त, शाश्वत और अपरिवर्तनीय वास्तविकता ईश्वर के साथ सह अस्तित्व में आ जायेगी और ईश्वर न केवल सीमित हो जाएगा बल्कि उसका अस्तित्व ही निषेधित हो जायेगा। भौतिक द्रव्य में विश्वास भौतिकवाद और निरीश्वरवाद को जनम देता है। इन्हें इस आधार वाक्य कि भौतिक द्रव्य का अस्तित्व है का निषेध करके के ही रोका जा सकता है।

9.3 अमूर्त विचारों का निरसन

पूर्ववर्ती आधुनिक दार्शनिकों के व्यवहार के अनुरूप बर्कले ने *प्रिन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलिज* का आरम्भ अतीत की झूठी अवधारणाओं के निराकरण से किया। लॉक ने सहज विचारों को निरस्त किया था और बर्कले ने, अनुभववाद को आगे बढ़ाते हुए अमूर्त प्रत्ययों का खण्डन

किया। लॉक ने कहा कि केवल विशेष वस्तुओं का ही अस्तित्व है। फिर वे कहते हैं कि इन वस्तुओं की एक दूसरे के साथ तुलना करके सामान्य गुण जैसे विस्तार, रंग, गति, मानव, जानवर आदि को प्राप्त किया जा सकता है। लॉक विविध गुणों और भौतिक वस्तुओं को एक साथ बाँधे रखने वाले एक आधार का अस्तित्व स्वीकार करते हैं। यद्यपि उनका मानना था कि ऐसे आधार का प्रत्यक्ष अनुभव संभव नहीं है और न ही इस आधार तत्व के स्वरूप और इसमें उपस्थित हमारे अनुभव के प्रत्ययों के सत्य सम्बंधों को खोजा जा सकता है। बर्कले जोर देकर कहते हैं कि हम किसी भी तरह के अमूर्त प्रत्ययों का कभी अनुभव नहीं कर सकते हैं, और शब्द, जिसके द्वारा अमूर्त प्रत्ययों को निर्देशित किया जाता है, केवल नाम है क्योंकि वहाँ वास्तव में उनके अनुरूप कुछ भी नहीं है।

बर्कले ऐसे दार्शनिकों से क्षुब्ध थे जो वैज्ञानिकों के साथ मिलकर सरल वस्तुओं को कठिन बनाकर सामान्य लोगों में यह कर कि प्रत्यक्ष वास्तविकता को पकड़ने का प्रमाणिक ढंग नहीं है बल्कि उसे सार्वभौमिक अवधारणाओं की अनतर्दष्टि द्वारा ही जाना जा सकता है संदेह उत्पन्न करते थे। इस प्रकार के मत से ज्ञान की निश्चितता के प्रति संदेह उत्पन्न हुआ और इसने सन्देहवाद को जन्म दिया।

प्रचलित विज्ञान के द्वारा सत्य को जानने के बुद्धिवादी दृष्टिकोण पर बल देने से और लॉक के अज्ञेय द्रव्य के विचारों ने बर्कले को उकसाया। बर्कले नैतिकता व धर्म के कट्टर रक्षक थे। विज्ञान के देकार्तिय ढ़ग में विज्ञान निश्चित ज्ञान प्राप्त कराने में इन्द्रियों की दक्षता का विरोध करता है और इस तरह वैज्ञानिक नियम बुद्धि को सत्य प्राप्ति के एक मात्र साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। बर्कले ने इस विचार के प्रति पूर्णतः असहमति व्यक्त की और तर्क दिया कि वैज्ञानिक स्वयं अनुभविक विधि का प्रयोग करते हैं और फिर भी निरन्तर उसके प्रति असन्तोष व्यक्त करते हैं। वह कहते हैं कि प्रत्यक्ष और सत्य के अपने बोध से वह (वैज्ञानिक) इन्द्रिय जगत द्वारा धारित निश्चित प्रत्यक्ष और असत्य की खोज के लिये अग्रसर होते हैं। इस अवस्था में, वास्तव में, वे अप्रत्यक्ष और असत्य के वास्तविक अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और प्रत्यक्ष और सत्य के अस्तित्व की वास्तविकता, जिसके बोध से वे प्रारम्भ करते हैं, को नकारते हैं और इस प्रकार विरोधाभास को जन्म देते है। बर्कले वैज्ञानिकों के बुद्धिवादी दृष्टिकोण का विरोध

करते हैं क्योंकि निरिक्षण के बिना भौतिक विज्ञान का अस्तित्व असम्भव है। बर्कले सन्देहवादियों और नास्तिकों द्वारा धर्म और नैतिकता को पहुंचाई गयी हानी को अमूर्त प्रत्यय और भौतिक पदार्थ सम्बंधि विश्वासों में असंगति दिखाकर दूर करना चाहते थे।

ह्यूम ने बर्कले के द्वारा अमूर्त प्रत्यय के विचार के खण्डन को उस समय के बौद्धिक जगत की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण खोजों में से एक खोज माना है। स्वयं बर्कले ने अपने अमूर्त प्रत्यय के खण्डन को अभौतिकवाद के समर्थन में एक महत्वपूर्ण घटक के रूप से इसलिये स्वीकार किया क्योकि यदि हम (अदृश्य वस्तुओं में विश्वास का) व्यापक रूप से परीक्षण करें तो स्पष्ट होता है कि इसके मूल में अमूर्त प्रत्यय का सिद्धांत ही कार्य करता है।

बर्कले दो लक्ष्यों, तत्कालिक लक्ष्य व दूरस्थ लक्ष्य से संचालित थे। तत्कालिक लक्ष्य लॉक के निर्धार्य अथवा सामान्य वस्तुओं, जैसे किसी विशिष्ट लाल रंग, के विपरीत सामान्य लाल रंग, अथवा समकोण त्रिभुज व समबाहु त्रिभुज के विपरीत सामान्य त्रिभुज का खण्डन करना था। उनका दरस्थ लक्ष्य किसी भी प्रकार के सामान्य प्रत्यय के सिद्धांत का खण्डन करना था। बर्कले मूल रूप से विशेष प्रत्यय को स्थापित करने का प्रयास कर रहे थे। इस विचार के अनुसार, ऐसी वस्तुएं जो हमारे मन में या बाहर रहती हैं विशिष्ट होती हैं। ऐसा करने के पीछे उनका उद्देश्य स्कालिस्टिक तत्वमीमांसा में किसी न किसी ढंग से महत्वपूर्ण रही सामान्य की शाश्वत समस्या से अपने दर्शन को बाहर निकालना था। बर्कले ने घोषणा की कि न केवल आकारों, प्रजातियों अथवा सामान्यों का अस्तित्व नहीं होता है बल्कि स्वयं प्रत्यय भी शुद्ध रूप से विशिष्ट होते हैं। बर्कले के अनुसार, लॉक ने भी विशिष्टतावादी सिद्धांत का पालन किया किन्तु उनके सिद्धांत में विसंगति अन्तर्निहित थी। लॉक का विशिष्टता सिद्धांत, उदाहरण के लिये, लाल के प्रत्यय को लेकर एक दुविधा में था। परिभाषानुसार लाल का प्रत्यय अपने अन्दर अनेक वस्तुओं को अन्तर्निहित किये रहता है, अतः यह विशिष्ट हो ही नहीं सकता। इस सम्बन्ध में लॉक का प्रत्युत्तर है कि "सामान्य प्रत्ययों के प्रतिकों से निर्मित होने के कारण शब्द (लाल) सामान्य हो जाते हैं।'' (लॉक, *एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 3, अध्याय 3, खण्ड 6)। उन्होंने सभी मानसिक विषयों प्रत्यय सहीत. को एक साथ रखकर प्रत्यय का निर्माण किया और प्रत्यय को मानसिक चित्र के रूप में समझा। अधिक स्पष्ट शब्दों में,

मानसिक चित्र स्पष्टतः विशिष्ट है, किन्तु विशेष सामान्य प्रत्यय जैसे कि लाल या त्रिभुज को समाहित करने में सक्षम नहीं है। बर्कले के अनुसार, लॉक की इस सम्बन्ध में व्याख्या यह है कि इस प्रकार के चित्र में अपरिभाष्यता का गुण होता है। ''क्या त्रिभुज के सामान्य प्रत्यय को बनाने में कौशल और कठिन क्रिया की आवश्यकता नहीं होती... क्योंकि यह प्रत्यय न तो आयत होना चाहिए न समबाहु और न ही चतुर्भुज होना चाहिए वरन् इसे सब कुछ होना चाहिए किन्तु किसी एक को सब कुछ नहीं होना चाहिए। वास्तव में, यह अपूर्ण है जिसका अस्तित्व नहीं हो सकता है। यह एक ऐसा प्रत्यय है जहाँ अनेक विभिन्न और असंगत प्रत्यय एक साथ रखे होते हैं।'' (*एन एस्से कन्सर्निंग ह्यूमन अण्डरस्टेडिंग*, पुस्तक 4, अध्याय 7, खण्ड 9; एवं द्रष्टव्य– बर्कले, *ए ट्रीटाइज कन्सर्निंग द प्रिन्सिपल ऑफ ह्यूमन नॉलेज*, परिचय (संक्षेपण– *पीएचके*), खण्ड 13)। इसलिए इसमें एक प्रकार की अन्तर्निहित अपरिभाष्यता दो ढ़गों से चली आती है। एक और त्रिभुज का चित्र विषमबाहु त्रिभुज या समबाहु त्रिभुज से पृथक एक त्रिभुज है और दूसरी ओर यह इन सब विरोधी गुणों के साथ एक त्रिभुज है। इस प्रकार, विशेष विषय–चित्र सभी विशिष्ट आकारों का अपवर्जन करता है और साथ ही साथ यह विशिष्ट आकारों का अध्यारोपित रूप भी है। इस पर बर्कले की आपत्ति यह है कि विशेष आकार से हटकर कोई अनिर्धारित विशेष नहीं होते और न ही विभिन्न विरोधी आकारों वाला कोई सामान्य प्रत्यय होता है। इस प्रकार, लॉक का चित्रवाद को आन्तरिक सामान्यता से संयुक्त करने का प्रयास विफल रहता है।

और अधिक स्पष्ट शब्दों में, बर्कले के अनुसार देश अथवा शुद्ध विस्तार जिसमें से न कोई रेखा, न कोई सतह, न कोई ठोसता का प्रत्यक्ष एक असम्भव घटना है और हम ऐसे किसी प्रत्यय का निर्माण नहीं कर सकते। ऐसे त्रिभुज के प्रत्यय का जो न समबाहु, न विषमबाहु न आयत और न ही समान्तर हो फिर भी सब हो और न इनमें से कोई एक हो अबोधगम्य है। त्रिभुज की परिभाषा, तीन रेखाओं वाला समतल सभी विशिष्ट त्रिभुजों की विशष्टिताओं को नकारते हुए सभी त्रिभुजों पर लागू होती है किन्तु इससे यह बिल्कुल भी आपादित नहीं होता है कि हमारे पास त्रिभुज का एक सामान्य अमूर्त प्रत्यय होता है। समान रूप से किसी रंग के अमूर्त प्रत्यय का निर्माण असम्भव है। संक्षेप में, सामान्य अमूर्त प्रत्यय एक असम्भव घटना

अनुभववाद का कड़ाई से पालन करते हुए बर्कले ने अर्मूत प्रत्यय को पूर्णतः निरस्त कर दिया। वह कहते हैं कि विभिन्न विशेष वस्तुओं के लिये किसी एक सामान्य प्रत्यय का निरूपण करना एक नाम मात्र प्रदान करना है। सामान्य प्रत्यय किसी तथ्य का वर्णन नहीं करता है। वह अपने इस सिद्धांत को नामवाद कहते हैं। नामवाद के अनुसार, अमूर्त प्रत्यय अथवा सामान्य प्रत्यय केवल नाम मात्र है। ऐसे शब्दों का प्रयोग करना जिनके अनुरूप कोई वास्तविक अनुभव न हो केवल शब्दों को यर्थाथ सत् के साथ मिलाकर भ्रम उत्पन्न करना है। वह कहते हैं कि केवल प्रत्ययों पर ध्यान लगाने से ही हम भटकाव से बच सकते हैं। (*पीएचके*, परिचय, खण्ड 25)।

बोध प्रश्न 2

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) बर्कले द्रव्य की अभौतिकता को कैसे स्थापित करते हैं?

....

....

....

....

2) बर्कले अमूर्त प्रत्यय के खण्डन से क्या प्राप्त करना चाहते थे?

....

....

....

....

9.4 दृश्यते इति वर्तते

दृश्यते इति वृत्ते बर्कले का आश्चर्यचकित करने वाला विचारोत्तेजक कथन है। इस कथन के अनुसार, अस्तित्वमान होने का अर्थ है प्रत्यक्ष होना अर्थात जिसका प्रत्यक्ष नहीं होता उसका अस्तित्व भी नहीं होता। स्पष्टतः यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि अनुभूत न हो तब भी क्या वस्तुएं अस्तित्वमान रहती है। बर्कले के अनुसार, यह पूरा प्रकरण हमारी अस्तित्व शब्द की व्याख्या पर निर्भर करता है। वह कहते हैं; ''यह मेज जिस पर मैं लिख रहा हूँ और मानता हूँ कि अस्तित्वमान है अर्थात मैं इसे देखता हूँ और अनुभव करता हूँ; अब यदि मैं अपना अध्ययन समाप्त करके कमरे से बाहर आ जाता हूँ तब मैं कहता हूँ कि वह अभी भी अस्तित्वमान है; अर्थात यदि मैं अध्ययन कर रहा होता तो मैं उसका प्रत्यक्ष कर रहा होता अथवा कोई अन्य आत्मा उसका निरन्तर प्रत्यक्ष कर रही है।'' (पीएचके, भाग 1, खण्ड 3)। इस प्रकार बर्कले का मानना है कि हम 'अस्तित्व' शब्द के प्रयोग की ऐसी स्थिति की कल्पना नहीं कर सकते जबकि कोई न कोई आत्मा सतत रूप से उसका प्रत्यक्ष न कर रहा हो।

किसी अदृश्यमान विषय की असम्भावना लॉक के विषय के प्रत्यय से निगमित होती है। लॉक के अनुसार, भौतिक विषय ठोस, विस्तारवान, आकृतिमय, गति की शक्ति से सम्पन्न, रंगीन, भारी, स्वाद, घ्राण, ध्वनि सम्पन्न होता है। ये सभी गुण मूलतः विषय के प्रभाव है। भौतिक विषय ये गुण प्रत्यक्ष कर्ता विषयी में उत्पन्न करते हैं और इसलिये प्रत्यक्षकर्ता में निर्वतमान रहते हैं और स्वयं विषय में उपस्थित नहीं रहते हैं। चूँकि ये गुण विषयों में अन्तर्निहित नहीं होते हैं इसलिये द्वितीयक गुण कहलाते हैं। दूसरी ओर, ऐसे गुण भी है जो द्रव्य/विषय में अन्तर्निहित होते हैं। ये प्राथमिक गुण कहलाते हैं। विस्तार, आकृति, ठोसता, गति और स्थिति आदि ऐसे ही प्राथमिक गुण हैं। बर्कले लॉक के इस विभाजन का खण्डन करते हैं और कहते हैं कि तथा कथित प्राथमिक गुण भी वास्तव में द्वितीयकगुणों के समान ही हैं। वह कहते हैं कि प्राथमिक गुण जैसे कि ठोसता और विस्तार की उपलब्धि मूलतः स्पर्श से होती है और द्वितीयक गुणों के समान ही हमारे मन में इनके सम्वेद बन जाते हैं। विस्तार के प्रत्यय को रंग

आदि अन्य द्वितीयक गुणों से पृथक नहीं किया जा सकता। फिर, कोई भी विस्तारवान वस्तु बिना रंग के दृष्टिगम्य नहीं हो सकती है। अतः प्राथमिक गुण अपृथक ढंग से द्वितीयक गुणों से जुड़े हुए हैं। यदि हम किसी ज्ञेय पदार्थ जैसे कि मेज का परीक्षण करे तो हमें यह अनुभव नहीं होता है कि इसकी आकृति बाहर पृथक रूप से अस्तित्वमान है और इसका रंग अन्दर मन में अस्तित्व मान है। अतः, लॉक का प्राथमिक और द्वितीयक गुणों का भेद निरर्थक है। प्रत्यक्ष किसी रंग और विस्तार का नहीं होता वरन् विस्तारित रंगीन विषय का होता है।

लॉक का मानना था कि द्रव्य, या पदार्थ, संवेदित गुणों का आधार होता है। बर्कले के हायलास और फिलोनाउस के मध्य के फर्स्ट डायलॉग में हायलास लॉक के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहता है कि भौतिक आधार मुझे अनिवार्य प्रतीत होता है, जिसके बिना गुणों के अस्तित्वमान होने को नहीं समझा जा सकता। फिलोनस उत्तर देता है कि मुझे आधार शब्द कोई स्पष्ट अर्थ प्रदान नहीं करता और मुझे और स्पष्ट करके समझाइये कि आप इस शब्द से अक्षरशः अथवा लाक्षणिक अर्थ में क्या समझते हैं। हायलास, आधार शब्द की कोई निश्चित परिभाषा देने में स्वयं को असमर्थ पाते हैं और कहते हैं; ''मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे नहीं पता कि मुझे क्या उत्तर देना चाहिए। फलतः निष्कर्ष निकलता है; अविचारणीय विषय (पदार्थ) का परम अस्तित्व एक निरर्थक शब्द है।'' (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 24) इसका यह अर्थ नहीं है कि संवेदित वस्तुओं का अस्तित्व नहीं है बल्कि यह अर्थ है कि संवेदित वस्तुओं का अस्तित्व अनुभूति सापेक्ष है। दूसरे शब्दों में, केवल प्रत्यय का ही अस्तित्व है। इसमें बर्कले यह जोड़ते हैं कि हम जो कुछ भी अनुभूत करते हैं, सुनते हैं या समझते हैं वह सदैव संरक्षित रहता है और पूर्णतः सत् होता है। (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 34) प्रश्न है कि तब फिर वह यह क्यों कहते हैं कि वस्तुएं नहीं प्रत्यय सत् है। बर्कले का उत्तर है कि ऐसा पदार्थ के अनुपयोगी प्रत्यय का निराकरण करने के लिये कहा जाता है; ''मैं किसी इन्द्रिय अथवा अनुचिन्तन से बोधित वस्तु के अस्तित्व का खण्डन नहीं करता हूँ... मैं केवल दार्शनिकों द्वारा प्रस्ताविक पदार्थ अथवा भौतिक द्रव्य के अस्तित्व का खण्डन करता हूँ।'' (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 35)

चूंकि बर्कले के समय का विज्ञान, विशेष रूप से भौतिक विज्ञान, पदार्थ की अवधारणा पर बड़े स्तर पर निर्भर था, इसलिये उन्होंने उसकी मूलभूत परिकल्पनाओं और प्रविधियों को चुनौती

देने की अनिवार्यता का अनुभव किया। बर्कले वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग में लाये जा रहे, विभिन्न सामान्य और अमूर्त प्रत्ययों, जैसे कि ये किसी वास्तविक सत् को निर्देशित करते हो, विशेषरूप से प्रकृति के मूल में स्थित किसी भौतिक तत्व (पदार्थ) के स्वीकार किये जाने को लेकर, सर्वाधिक दुखी थे। उन्होंने ऐसे किसी आधारभूत (अमूर्त) तत्व का भ्रामक रूप से अवलोकित गुणों से अनुमित होने के कारण खण्डन किया। वह कहते हैं कि ऐसा अनेक गुणों के एक साथ साहचर्य की अनुभूति होने के कारण है। अतः, उदाहरण के लिये, एक निश्चित रंग, गन्ध, स्वाद, आकृति और विभिन्न गुणों की नियत साहचर्यता को एक विशिष्ट वस्तु, जैसे कि सेव, का नाम दे दिया जाता है। इसी प्रकार अन्य वस्तुएं भी भिन्न गुणों के संग्रह मात्र है। (*पीएचके*, भाग 1, खण्ड 1) उनकी आकांक्षा वैज्ञानिक भाषा के विभिन्न पदों जैसे कि बल, गुरुत्व, कारणता को स्पष्ट करने की थी। वह कहते हैं कि ये पद प्रत्ययों के संग्रह से अधिक कुछ नहीं हैं और इन्हें हमारा मन सम्वेदों से प्राप्त करता है।

बर्कले ने जितना अधिक अपने मन की क्रियाविधि का परीक्षण किया और उसके प्रत्ययों का बाह्य विषयों से सम्बध का विश्लेषण किया वह उतना ही अधिक प्रत्ययों से स्वतन्त्र विषयों के अस्तित्व को खोजने में असफल हुए। वह कहते हैं कि जब भी हम पूर्ण प्रयास से बाह्य विषयों के अस्तित्व को ग्रहण करने का प्रयास करते हैं हम सदैव केवल अपने प्रत्ययों पर ही विचार कर रहे होते हैं। बाह्य जगत में ऐसा कुछ नहीं है जिसकी हमें अनुभूति न हो सके। अन्त में, बर्कले कहते हैं कि प्रत्यय केवल प्रत्यय के समान ही हो सकता है और इसलिये जब लॉक यह कहते हैं कि प्रत्यय और वास्तविक विषय भिन्न–भिन्न होते हैं; मानसिक होने से प्रत्यय और वास्तविक होने से पदार्थ तथा मानसिक और भौतिक दोनों प्राकृतिक रूप से एक दूसरे से भिन्न होने से लॉक के विचारों में एक विरोधाभास चला आता है। बर्कले कहते हैं कि यदि मन और विषय एक दूसरे से भिन्न है और फिर यदि यह माना जाए कि ज्ञान विभिन्नताओं की समानता पर आधारित है तो यह एक तार्किक विसंगति है। यदि मेरे प्रत्यय मेरे मन से बाहर विषयों के अनुरूप हैं तब इसे किसी अन्य मन में किसी अन्य प्रत्यय के रूप में होना चाहिए। अब, बर्कले लॉक के प्राथमिक और द्वितीयक गुणों के भेद का खण्डन करके वास्तव में सम्पूर्ण प्रतिनिधिकात्मक यर्थाथवाद के तन्त्र का खण्डन कर देते हैं।

9.5 ईश्वर और वस्तुओं का अस्तित्व

बर्कले कहते हैं कि वस्तुओं को अस्तित्वमान होने के लिए उनका अनुभव होना अनिवार्य है। वस्तुएं मेरे प्रत्यक्ष के अनुरूप होती हैं। लेकिन प्रश्न यह उठता है कि जब मैं वस्तुओं को नहीं देख रहा होता तो मैं कैसे जानता हूँ कि वे तब भी अस्तित्व में है, या नहीं। अब चूँकि बर्कले ने न तो वस्तुओं के अस्तित्व को नकारा है और न ही उनकी आपसी स्थिति और क्रम को नकारा है तब बिना अनभति के वस्तओं के अस्तित्व को सत कसे माना जा सकता है? इसके उत्तर में बर्कले कहते हैं कि जब मैं अपने मन से बाहर वस्तुओं के अस्तित्व को नकारता हूँ... तब वह अन्य मनों... में प्रत्यक्ष हो रही होती है। (*थ्री डायलॉग बिटवीन हायलस एण्ड फिलोनस,* डायलॉग 3)। और यदि वस्तुएँ किसी भी अन्य मन द्वारा प्रत्यक्ष नहीं हो रही हो तो उन्हें देखने के लिये एक सर्वशक्तिशाली, अनन्त मन (ईश्वर) होता है। ईश्वर सभी वस्तुओं के बारे में जानता है और समझाता है, और उन्हें हमारे सम्मुख कुछ इस ढंग से, कुछ नियमानुसार रखता है जैसे कि उसने उन्हें ऐसे ही अस्तित्वमान होने के लिये बाध्य किया है और जिन्हें हमने प्रकृति के नियम नाम दे दिया है। (*थ्री डायलॉग बिटवीन हायलस एण्ड फिलोनस,* डायलॉग 3)।

वस्तुतः, वस्तुओं का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व पर निर्भर है और ईश्वर ही प्रकृतिक में उपस्थित क्रमबद्धता का कारण है।

बर्कले कहते हैं कि अस्तित्व को अनुभूति के रूप में व्याख्यायित करके मुझे ज्ञान होता है कि जगत में मेरे समान ही अन्य व्यक्ति भी अस्तित्वमान है और उनके पास भी मन है। वे भी मेरे समान ही प्रत्ययों को धारण करते हैं। लेकिन मेरे और मेरे जैसे अन्य सीमित मनों से ऊपर एक भिन्न असीमित मन, ईश्वर है। प्रकृति में नियमबद्धता मूलतः ईश्वर के प्रत्ययों के कारण ही है। फिर, मानव मन में ईश्वर–प्रत्यय होता है जिसे वह अन्य मानवों को सम्प्रेषित करता है। अतः, मनुष्यों के दिन–प्रतिदिन के अनुभवों का कारण ईश्वर है न कि पदार्थ अथवा द्रव्य। यह ईश्वर ही है जो सीमित मनों के सभी अनुभवों को संयोजित करते हैं और अनुभव में नियतता और निर्भरता सुनिश्चित करते हैं। फलतः, हम प्रकृति के नियमों के अन्तर्गत ही सोचते हैं।

यद्यपि, सीमित मन और दिव्य मन भिन्न होने के कारण ईश्वर मन के तर्कसंगत और स्पष्टता से व्यवस्थित प्रत्ययों और ईश्वर मन द्वारा मानव–मन में संचारित प्रत्ययों में अन्तर होता है। अतः, परम सत् स्वभावतः आध्यात्मिक है, न कि भौतिक और विषयों का निरन्तर अस्तत्व ईश्वर के उनके निरन्तर प्रत्यक्ष पर आधारित है। बर्कले प्रत्ययों के ईश्वर–मन से मानव–मन में उत्पन्न होने की व्याख्या करने में कारणता की विशिष्ट व्याख्या करते हैं। वह इस तथ्य का विरोध नहीं करते कि हमारे अन्दर कारणता की अन्तर्दृष्टि है, वरन् यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारे इन्द्रिय सम्वेद किसी विशिष्ट कारणता शक्ति को हमारे सम्मुख उपस्थित नहीं करते। केवल हमारी मानसिक संक्रियाओं के द्वारा हम इन कारण–सम्बन्धों को समझते हैं।

9.6 द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद का खण्डन

बर्कले कहते हैं कि उनका प्रत्ययवाद दर्शन के विभिन्न प्रकार के अस्पष्ट व गूढ प्रश्नों को समाप्त कर देता है। मानव ज्ञान को प्रत्ययों और आत्मा के ज्ञान के स्तर पर लाने के साथ–साथ बर्कले मन में उपस्थित विषय (अबोधगम्य विषयों) और मन से बाहर के विषय (वास्तविक विषयों) के मध्य के द्वैतवाद का खण्डन करते हैं। यह द्वैतवाद ही संदेह की जड़ होती है, क्योंकि हम यह कैसे जान सकते हैं कि ज्ञात (प्रत्यक्ष) वस्तुएं अज्ञात (अप्रत्यक्ष) वस्तुओं को कैसे सिद्ध कर सकती हैं। यदि रंग, आकृति, गति, विस्तार आदि मन से स्वतंत्र वस्तुओं को निर्देशित करती हैं, तो केवल प्रतीति का ही प्रत्यक्ष होता है न कि वस्तुओं के वास्तविक गुणों का। इन्द्रियों की यही अविश्वसनीयता संशयवाद को जन्म देती है और यह संदेहवाद ही प्रत्ययवादी सिद्धांत से खंडित होता है।

बर्कले कहते हैं कि द्रव्य का सिद्धांत ही निरीश्वरवाद के प्रसार के लिये उत्तरदायी है। भौतिकतावाद के खण्डन से निरीश्वरवाद का सम्पूर्ण ढांचा धराशायी हो जाता है। वह कहते हैं कि यदि स्व अस्तित्व, निष्क्रिय, अविचारित द्रव्य सभी विषयों का मूल है तब स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रता, बौद्धिकता ओर अभिकल्प को ब्रह्माण्ड निर्माण से बाहर रखना पड़ेगा। बर्कले ने यह भी अनुभव किया कि भौतिक पदार्थ को स्थायी सत् मानने के कारण ही मूर्ती पूजा अस्तित्व में आती है। यदि सम्वेदित विषय केवल सम्वेदनाओं के समूह मात्र हो तो मनुष्य के लिये अपने

ही प्रत्ययों की पूजा करना हास्यास्पद होगा। यदि भौतिक पदार्थ के वास्तविक सत् को उजागर कर दिया जाये तो केवल ऐसा भौतिक तत्व उभर कर सामने आता है जो प्रत्ययों अथवा गुणों का संयोजन मात्र है, तब भौतिक पदार्थ को पुर्नस्थापित करना असम्भव हो जाता है। इससे बर्कले पूर्णतः सहमत थे कि यदि पदार्थ, निरीश्वरवाद, मूर्तिपूजा और अधर्मिकता की परिकल्पनाओं को ध्वस्त कर दिया जाये तो वे बिना किसी प्रमाण के स्वतः ही नष्ट हो जाएंगे। बर्कले पूर्ण रूप से आश्वस्त थे कि अपने दृश्यते इति वृतते के सिद्धांत के द्वारा दार्शनिक भौतिकवाद और धार्मिक संशयवाद कि स्थिति को उन्होंने कमजोर बना दिया है। लॉक के अनुभववाद पर खड़े होकर बर्कले इस निर्णायक बिन्दू पर पहुंचे कि मानव मन सदैव अनुभवों पर ही कार्य करता है और अमूर्त प्रत्यय किसी यथार्थ सत्ता को निर्देशित नहीं करते। ह्यूम, जिन्होंने अनुभववाद को शीर्ष पर पहुचाया, बर्कले के बारे में कहते हैं कि बर्कले ने एक महान दार्शनिक के रूप में अपने से पूर्व के विवादास्पद मुद्दों को खण्डित किया और निश्चित किया कि सामान्य प्रत्यय विशेष प्रत्यय के अतिरिक्त और कुछ नहीं है... मैं इसे सतरहवीं और अठ्ठारहवीं शताब्दी के बौद्धिक समुदाय के दार्शनिकों में सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान उपलब्धि मानता हूँ। (ह्यूम, *ए ट्रीटाइज ऑफ ह्यूमन नेचर*, पुस्तक 1, भाग 1, खण्ड 7)।

बोध प्रश्न 3

टिप्पणीः

क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का उपयोग कीजिए।

ख) इकाई के अन्त में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) क्या बर्कले ने लॉक के प्राथमिक व द्वितीयक गुणों के अन्तर को स्वीकार किया?

....

....

....

....

2) बर्कले के अनुसार दृश्यते इति वृतते क्या है?

....

....

....

....

9.7 सारांश

इस इकाई में हमने बर्कले के दर्शन के मुख्य सिद्धांतों को समझने का प्रयास किया है। बर्कले एक अनुभववादी थे और उनके दर्शन को विषयीनिष्ठ आदर्शवाद कहा जाता है। उन्होंने अमूर्त प्रत्ययों व भौतिक वस्तुओं के वास्तविकता के सिद्धांतों का खण्डन किया है। उन्होंने प्रसिद्ध सिद्धांत दृश्यते इति वृतते का प्रतिपादन किया। इसके अनुसार, वस्तुएं मानव अनुभूत जगत में बाह्य रूप से विद्यमान नहीं है वरन् मानव की अनुभूति में है। दूसरे शब्दों में, मानव–मन में उपस्थित प्रत्यय ही वास्तविक सत् है। बर्कले का ईश्वर के अस्तित्व के प्रति दृष्टकोण इसलिये चर्चा का विषय बना क्योंकि उनका मानना है कि बाह्य जगत का अस्तित्व ईश्वर द्वारा उसे शाश्वत रूप से प्रत्यय करते रहने से है। बर्कले ने इसे द्वैतवाद, निरीश्वरवाद और संशयवाद के खण्डन के द्वारा स्थापित किया।

9.8 कुंजी शब्द

अनुभववाद : ज्ञानमीमांसा में वह सिद्धान्त जिसका मानना है कि ज्ञान के स्रोत हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियां (आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा) हैं, और अनुभव के पूर्व या परे कोई ज्ञान सम्भव नहीं।

विषयीनिष्ठ (व्यक्तिनिष्ठ) प्रत्ययवाद : वह दार्शनिक सिद्धान्त जिसका मानना है कि साधारण भौतिक वस्तुओं के अस्तित्व की शर्त है उनका आनुभविक होना। सभी सत् मन–सापेक्ष (मन पर निर्भर) है, जिसका आशय है कि वस्तु या तो मनुष्य के मन में या फिर ईश्वर के मन में अस्तित्ववान है।

9.9 अन्य सहायक अध्ययन–सामग्री एवं सन्दर्भ

ऐयरस, एम., *लॉक*, वोल्यू–2, चंदन, राउटलेज एण्ड केगन पॉल, 1991.

बन्नेट, जे., *लॉक, बर्कले, ह्यूमः सेन्ट्रल थीम्स*, आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1971.

जेन्सी, जे., *बर्कलेः एन इन्ट्रोडक्शन*, आक्सफोर्ड, ब्लैकवैल, 1987.

फ्लेज, डी.ई., *बर्कलेस डाक्ट्राइन ऑफ नोशनस*, बकेनहेम, क्रूम हेम, 1987.

फोस्टर, जे., *द केस ऑफ आइडियलिज्म*, राउटलेज एण्ड केगन पाल, 1982.

ग्रेयलिंग, ए.सी. *बर्कलेः द सन्ट्रल आरग्यूमेन्ट्स*, लन्दन, डाकवर्थ, 1986.

मारटिन, सी.बी. एण्ड आर्मस्ट्रोंग डी.एम., एडि., *लॉक एण्ड बर्कले*, चंदन, मेक्मिलन, 1968.

पिचर, जी. *बर्कले*, लंदन, राउटलेज एण्ड केगन पाल, 1977.

आर्मसन, जे.ओ., *बर्कले*, आक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1982.

वार्नोक, जी.जे., *बर्कले*, हारमोण्डसवर्थ, पेन्यून बुक्स, 1953.

वाइलड, जान, *जॉर्ज बर्कले*, मेसेच्यूसेट, हावर्ड यूनिवर्निटी प्रेस, 1936.

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) जार्ज बर्कले एक आइरिस व्यक्ति थे। उनका जन्म 1685 में हुआ था। अपनी प्रारम्भिक शिक्षा किलकैनी में सम्पन्न करने के बाद वह ट्रिनिटी कॉलेज पहुंचे। सोलह साल की अवस्था में ही वे पहले स्नातक के रूप में और इसके बाद एक शिक्षक और तेरह सालों तक शोधकर्ता के रूप में अपने कैरियर की पराकाष्ठा पर पहुँचे। 1934 में वह क्लोयने के विशप बने। यहाँ उन्होंने विद्वतपूर्ण कार्य किए। उनके मुख्य लेखन कार्यों में कामनप्लेस बुक, ए न्यू थ्योरी ऑफ विजन, प्रन्सिपलस ऑफ ह्यूमन नालिज, द डायलोग्स ऑफ हायलास एण्ड फिलोनस, ऐलिसिफ्रोन डन सिनस सम्मिलित है। स्वास्थ्य बिगडने से वे आक्सफोर्ड चले गये, जहाँ 1753 में उनकी मृत्यु हो गई। वे सभी के द्वारा बड़े विद्वान और सहाचारी पुरुष के रूप में स्वीकृत किये गये।

2) बर्कले के समय में वैज्ञानिक विकास के चलते भौतिकवाद और निरीश्वरवाद का प्रभाव बड़ता जा रहा था। बर्कले एक धार्मिक व्यक्ति थे। उन्होंने निरीश्वरवादी विचारों का यह कह कर खण्डन किया कि भौतिक जगत स्वभावतः आध्यात्मिक है और यह सृष्टि ईश्वरीय अच्छाई की अभिव्यक्ति सम्मत भावना है। उन्होंने लॉक के अनुभववाद की विसंगतियों को भौतिक द्रव्य का खण्डन करके दूर किया और अपने विशिष्ट दर्शन को विकसित किया।

बोध प्रश्न 2

1) बर्कले ने भौतिक द्रव्य की असम्भावना को यह कह कर नकार दिया कि केवल अनुभूत वस्तुओं को ही जाना जा सकता है और द्रव्य का प्रत्यय यह योग्यता पूरी नहीं करता है। फिर उन्होंने लॉक के प्राथमिक गुणों और द्वितीयक गुणों के भेद का भी खण्डन किया। बर्कले ने स्वीकार किया कि सम्पूर्ण ज्ञान का आधार केवल अनुभव ही है और अनुभव से परे किसी वस्तु का अस्तित्व सम्भव नहीं है।

2) बर्कले अमूर्त प्रत्यय का खण्डन दोहरे उद्देश्य से करते हैं। प्रथम, वे लॉक के सामान्य प्रत्यय सिद्धांत जैसे कि लाल वस्तुओं से प्रथक सामान्य लाल रंग अथवा विशिष्ट त्रिभुजों से प्रथम सामान्य प्रतिनिधिक त्रिभुज का खण्डन करना चाहते थे। दूसरे, वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि सबकुछ विशेष है। इसके लिये उन्होंने पूराने अन्तर्निहित सामान्यता के प्रत्यय को

असिद्ध किया। उन्होंने कहा कि कोई सामान्य प्रत्यय नहीं होता है सभी प्रत्यय विशिष्ट होते हैं।

बोध प्रश्न 3

1) लॉक के अनुसार भौतिक विषय के कुछ निश्चित गुण होते हैं। कुछ गुण जैसे कि रंग, गन्ध, ध्वनि, स्वाद मूलतः विषयों के वे गुण है जो विषयी में उत्पन्न होते हैं और इसलिये विषयी में रहते हैं न कि विषय में। ये गुण द्वितीयक गुण कहलाते हैं। दूसरी ओर विषय में अन्तर्निहित द्वितीयक गुण जैसे कि विस्तार, आकृति, ठोसता आदि होते हैं। बर्कले इस भेद को स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि द्वितीयक गुण भी प्राथमिक गुण की तरह ही स्पर्श और दृष्टि के द्वारा ही प्राप्त होते हैं और रंग, स्वाद आदि की तरह ही सम्वेद बन जाते हैं। फिर, प्राथमिक और द्वितीयक गुण एक दूसरे से अपृथकनीय ढंग से संयुक्त होते हैं। हम रंग और विस्तार का प्रत्यक्ष नहीं करते हैं बल्कि रंगीन विस्तारित विषय का प्रत्यक्ष करते हैं।

2) बर्कले का दृश्यते इति वर्तते के सिद्धांत से यह तात्पर्य था कि विषय प्रत्यय/ अनुभव सम्मत होते हैं। किन्तु यदि मैं विषयों का प्रत्यक्ष नहीं करूं तब विषय कैसे अस्तित्वमान होते हैं। बर्कले का उत्तर हैं कि तब इसे कोई अन्य मन अनुभूत कर रहा होता है और – यदि कोई दूसरा मानव मन भी उपलब्ध न हो तो शाश्वत ईश्वर इनका प्रत्यक्ष कर रहा होता है। इससे विषयों का सदैव अस्तित्व बना रहता है।